विष्वविद्यालय में महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

पंतनगर। 13 मई 2025। उत्तराखंड के जनजातीय क्षेत्रों की महिलाओं को दूध और कृषि उत्पादों से मूल्य संवर्धन एवं विपणन के आधुनिक तरीकों से प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से विष्वविद्यालय के कृषि संचार विभाग द्वारा 'दूध से बने मूल्य संवर्धित उत्पादों लस्सी, क्रीम, दही, आईसक्रीम, मिठाइयाँ एवं उनके विपणन के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण' विषय पर एक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम आईसीएआर जनजातीय उप–योजना 2024–25 के तहत ग्राम जगंपुरी, गदरपुर में आयोजित किया गया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विष्वविद्यालय के पषुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय के सह प्राध्यापक डा. सुनील कुमार, ग्राम प्रधान श्री राजीव कुमार और परियोजना प्रमुख डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल, सहायक प्राध्यापक, कृषि संचार विभाग, प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। प्रषिक्षण में डा. सुनील कुमार ने 'स्वच्छ और गुणवत्तापूर्ण दूध उत्पादन' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए प्रशिक्षणार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाले दूध के उत्पादन के लिए स्वच्छता, पशु देखभाल, पोषणयुक्त आहार, और दुग्ध संग्रहण की उचित विधियों पर विशेष जोर दिया। उनका मानना था कि स्वच्छ दूध से न केवल उपभोक्ता का स्वास्थ्य सुधरता है, बल्कि इससे मूल्य संवर्धन भी संभव है, जिससे ग्रामीण महिलाएं और किसान आर्थिक रूप से सशक्त बन सकते हैं। ग्राम प्रधान श्री राजीव कुमार ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम गाँव की महिलाओं को सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। उन्होंने विष्वविद्यालय का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल दिया। डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी साझा करते हुए बताया कि प्रशिक्षण में महिलाओं को केवल दूध से बने उत्पादों की निर्माण तकनीक ही नहीं, बल्कि पैकेजिंग, गुणवत्ता नियंत्रण, ब्रांडिंग, विपणन रणनीतियाँ और ग्राहक संवाद जैसे व्यावसायिक कौशल भी सिखाए गए। हैंड्स–ऑन सत्रों के माध्यम से महिलाओं को उत्पाद निर्माण की पूरी प्रक्रिया में सहभागी बनाया गया, जिससे उन्हें व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर सभी प्रतिभागियों को उनके भविष्य के प्रयासों में सहायता के लिए बाल्टियाँ, डिब्बे, चीनी, हैंडबैग, खोया आदि सामग्री वितरित की गई, ताकि वे सीखे हुए ज्ञान को अमल में लाकर अपने स्वयं के छोटे व्यवसाय की शुरुआत कर सकें।